अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, साहित्य का सावधानीपूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान के संबंधित क्षेत्र में जानकारी प्रदान करता है तथा पूर्व में किया गया अध्ययन वर्तमान अध्ययन के लिए आधारशिला का कार्य भी करता है। साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह कोई भी अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

2.2 संबंधित साहित्य का अध्ययन :

एस.आई.आर.टी. राजस्थान (1966) में कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की काव्य पाठ में रूचि का अध्ययन किया गया, जिसके उद्देश्य हैं, कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तक में दी गई कविता की विषय वस्तु, भाषा एवं शैली के सदंर्भ में रूचि का अध्ययन करना, स्थानीय क्षेत्रीय भाषा हदौटी और मारवाड़ी में लिखित कविताओं के प्रति विद्यार्थियों की रूचि का अध्ययन करना, तथा कक्षा आठवीं की पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों की रूचि अनुसार कविताओं के चयन के बारे में सुझाव देना। इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न है– कि विद्यार्थी महापुरूषों, मातृभूमि, देशभक्ति, बहादुरी, राष्ट्रवादिता से संबंधित विषयों की कविता मे अधिक रूचि रखते हैं, तथा भूख, दुख, दर्द, अग्नि से संबंधित विषयों में कम रूचि रखते है। भाषा की दृष्टि से क्षेत्रीय भाषा में लिखित गेयात्मक में अत्याधिक रूचि रखते है, संगीतात्मक लय बद्ध कविता विद्यार्थियों को उत्साहित करती हैं तथा विद्यार्थी मैगजीन आदि में दी गई कविताओं को भी पढ़ाने में रूचि रखते हैं।

अध्ययन बताता है कि लगभग 55% विद्यार्थी कविता–अंताक्षरी प्रतियोगिता में भी भाग लेने में रूचि रखते है तथा छात्राओं का भी रूझान इस ओर अधिक पाया गया। शहरी विद्यार्थी रेडियो पर आने वाली कविता के श्रवण में तथा ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालय की साहित्यिक सभाओं में होने वाली कविता पाठ का श्रवण करने में ज्यादा रूचि रखते हैं।

पचौरी जी.सी. (1979) ने हिन्दी व्याकरण पर अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों की प्रभावशीलता का अध्ययन किया इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं– कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की "संधि" (व्याकरण पाठ) की उपलब्धि पर अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों का अध्ययन करना, विद्यार्थियों को पढ़ाई जाने वाली "संधि" पर अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों के प्रभाव का अध्ययन उनके लिंग के आधार पर करना। इस अध्ययन से प्राप्त हुए प्रमुख निष्कर्ष हैं हिन्दी व्याकरण में आई संधि के शिक्षण पर रेखीय अभिक्रमित अधिगम शैली ज्यादा प्रभावशाली रही तथा अभिक्रमित अधिगम की विभिन्न शैलियों का लिंग भेद के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया।

अग्रवाल (1981) ने पढ़ने की योग्यता परीक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होने पढ़ने की योग्यता, शाब्दिक एवं अशाब्दिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में संज्ञानात्मक कारक, असंज्ञानात्मक कारकों से अधिक महत्वपूर्ण है।

मिश्रा (1982) ने सामाजिक शैक्षिक स्तर के संदर्भ में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा सम्पन्नता का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य किया, तथा इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि भाषा का संरचनागत विकास सामाजिक शैक्षिक स्तर से प्रभावित नहीं होता है। मानक भाषा के दृष्टिकोण से

वर्तनी त्रुटि पर माता पिता की उच्च शिक्षा का प्रभाव चौथी कक्षा तक सार्थक रूप से पड़ता है।

एस. सारसअम्मा (1984) ने अहिन्दी भाषा कर्नाटक राज्य में कक्षा आठवीं स्तर पर विद्यार्थियों का हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में छात्र–छात्राओं का प्रदर्शन समान रहा। कन्नड़ एवं अंग्रेजी माध्यम में पढने वाले छात्र छात्राओं का हिन्दी आधारभूत शब्द भण्डार में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं में कोई विशेष अंतर नहीं है तथा हिन्दी के आधारभूत शब्द भण्डार में ग्रामीण, शहरी तथा अर्धशहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं के प्रदर्शन में कोई विशेष अंतर नहीं है। लेकिन अर्ध शहरी छात्र छात्राओं का प्रदर्शन ग्रामीण एवं शहरी छात्र छात्राओं का आंशिक रूप से श्रेष्ठ है।

कुमार, एस. ए. (1985) ने विशिष्ट और औसत विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता तथा समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य हैं, विशिष्ट विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता तथा सामायोजन समस्या को पहचानना एवं विशिष्ट तथा सामान्य विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता तथा समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना। इस अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि विशिष्ट विद्यार्थी वैज्ञानिक, मेडिकल एवं तकनीकी क्षेत्रों में अधिक रूचि तथा कला व खेल में कम रूचि रखने वाले पाए गए। सामान्य छात्र वैज्ञानिक, साहित्यिक, तकनीकि एवं खेल क्षेत्रों में अत्याधिक रूचि रखने वाले पाए गए हैं। औसत स्तर की छात्राएं मेडिकल एवं साहित्यिक क्षेत्रों में अत्याधिक रूचि तथा क्राफ्ट में अपेक्षाकृत कम रूचि रखने वाली पाई गई है। विशिष्ट व सामान्य छात्राएं कृषि, गृह कार्य में समान स्तर की रूचि रखने वाली पाई गई। विशिष्ट छात्राएं तकनीकी क्राफ्ट में अधिक रूचि तथा कला, साहित्य एवं कृषि में

अपेक्षाकृत कम रूचि वाली पाई गई है। विशिष्ट विद्यार्थियों में आवश्यकता का उच्च स्तर पाया गया जबकि सामान्य विद्यार्थियों में केवल मूलभूत आवश्यकता के लिए ही उच्च आवश्यकता स्तर पाया गया। विशिष्ट विद्यार्थियों का विद्यालयीन समायोजन की अपेक्षा स्वास्थ्य समायोजन अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। सामान्य छात्रों में सभी तरह का समायोजन सामान्य छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया।

बुद्धेन प्रवीण (1996) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न है – लिंग, बुद्धिलब्धि, ग्रेड तथा उपलब्धि के आधार पर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विभिन्न विषयों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना। कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की लम्बवत विकास विधि (Longitudinal devlopment method) द्वारा विभिन्न विषयों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना तथा विभिन्न विद्यालयीन विषयों के प्रति अभिवृत्ति में सम्मिलित मुख्य कारकों का अध्ययन करना। इस अध्ययन से निष्कर्ष आए छात्राओं की अभिवृत्ति, गुजराती, गणित, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन और संस्कृत के प्रति ज्यादा धनात्मक पाई गई जबकि लडकों की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक थी, गुजराती एवं सामाजिक अध्ययन की अभिवृत्ति को समय प्रभावित नहीं करता है। छात्रों की अभिवृत्ति प्रथम बार अंग्रेजी के प्रति ज्यादा धनात्मक पाई गई, द्वितीय बार हिन्दी एवं संस्कृत के प्रति तथा तृतीय बार गणित एवं विज्ञान के प्रति उनकी अभिवृत्ति ज्यादा पाई गई। तथा विभिन्न विद्यालयीन विषयों के प्रति अभिवृत्ति में सम्मिलित कोई भी एक कारक जिम्मेदार नहीं था।

फाडके वासन्ती (1997) ने प्राथमिक विद्यालयीन स्तर पर मुहावरे और लोकोक्ति के अवधारणा निर्माण और उपयोग के शिक्षण पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य है–मातृ भाषा मराठी की पाठ्यपुस्तक में दिए गए

मुहावरे तथा लोकोक्तियों संबंधी अभ्यासों की उपयोगिता को आंकना। मुहावरे तथा लोकोक्ति में दिखाई पड़ने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को जानना। प्रारंभिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मुहावरे एवं लोकोक्ति ज्ञान का परीक्षण करना तथा मुहावरे तथा लोकोक्ति शिक्षण में परियोजना कार्य में अपनाई जाने वाली शिक्षण विधि की प्रभाव शीलता का अध्ययन करना। इस अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए लोकोक्ति की अपेक्षा मुहावरों को समझना विद्यार्थियों के लिए सरल था, विद्यार्थियों को कहावतें, लोकोक्ति तथा मुहावरों में पाया जाने वाला अन्तर स्पष्ट नहीं था। जिन विद्यार्थियों ने मुहावरे संबंधी प्रयोगात्मक शिक्षण विधि में भाग लिया उन्होंने इस शिक्षण समय में कम रूचि ली।

गुप्ता (1997) ने वैकल्पिक शालाओं का बाह्य मूल्यांकन संबंधी प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, यह अध्ययन भाषा की सोचनीय स्थिति को दर्शाता है, छात्रों की उपलब्धि का प्रतिशत भाषा शिक्षण की असलियत प्रकट करता है। इस अध्ययन के परिणाम बताते है कि कुल छात्रों 407 में से 68.8 प्रतिशत छात्रों की उपलब्धि 50 प्रतिशत से कम है। 28.5 प्रतिशत छात्रों ने 80 प्रतिशत से कम एवं 51 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किये है, तथा मात्र 2.94 प्रतिशत छात्रों ने 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक अर्जित किये है।

नूरजहाँ मालिक (1977) ने अपने लघु शोध प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं में हिन्दी विषय की चयनित दक्षताओं का तुलनात्मक अध्ययन नामक विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में शब्दों और वाक्यों को देखकर लिखने की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में अधिक है। अक्षरों एवं शब्दों को सही आकार व क्रम तथा उनके बीच की दूरी में अंतर की दक्षता ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों की बालिकाओं में

अधिक है। इसके कई कारण है उनमें से प्रमुख है, निर्धनता, सामाजिक, संकीर्णता, शिक्षा के प्रति अरूचि, अपने व्यवसाय या घरेलू कार्यो में लगा रहना तथा शालाओं का शैक्षिक वातावरण आकर्षक न होना।

भट्ट (1998) ने मंदसौर जिले के संदर्भ में कक्षा तीसरी एंव पाँचवी के विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा का निदानात्मक परीक्षण किया, यह अध्ययन कक्षा तीसरी के 241 एवं कक्षा पाँचवीं के 238 छात्र–छात्राओं पर आधारित था। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते है कि छात्र–छात्राओं की उपलब्धि स्तर संतोषजनक नहीं है।

अमिता सिंह (2000) ने कक्षा 6 के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में अधिगम कठिनाईयों के उपाय नामक विषय पर अध्ययन किया और अंत में निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों को मुहावरे का वाक्य प्रयोग, शब्दों से वाक्य बनाना, विश्लेषण, लिंग भेद, युक्त लेखन एवं संख्या लेखन में कठिनाई है। अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी हिन्दी भाषाओं में अधिक अधिगम कठिनाई का अनुभव करते है।

शर्मा अंजु (2002) ने अपने लघु शोध में प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के हिन्दी भाषाज्ञान का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी हिन्दी भाषा संबंधित कई त्रुटियाँ करते है– यथा मात्राओं की गलती, व्यवहारिक व्याकरण का उचित प्रयोग न कर पाना आदि। मुहावरों के अर्थ व उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने संबंधित प्रश्नों में तो विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर अति निम्न पाया गया तथा अन्य सभी व्याकरणिक घटकों में भी विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर औसत से निम्न ही पाया गया।

परमार विजय कुमार (2004) ने अपने लघु शोध में कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धियों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि लिंग भेद का विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान पर कोई प्रभाव नहीं पडता है। जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान को प्रभावित करते है।

2.3 संबंधित साहित्य के अवलोकन से प्राप्त निष्कर्ष –

शोधकर्ता द्वारा संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन कर पाया गया कि हिन्दी भाषा, साहित्य और व्याकरण आदि के क्षेत्र में काफी अध्ययन हुए है पर अभी तक विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं उनके मुहावरे ज्ञान के बीच पाए जाने वाले संबंध पर कोई भी अध्ययन आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों पर नहीं हुआ है, इसी संदर्भ को ध्यान में रखकर यह अध्ययन किया जा रहा है कि आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में साहित्यिक रूचि तथा व्याकरणिक घटक मुहावरे के ज्ञान के बीच पाए जाने वाले संबंध को विश्लेषणात्मक रूप से जाँचा जाए ताकि उनकी हिन्दी साहित्यिक रूचि के घटक अनुसार हिन्दी से संबंधित व्यवसायिक दक्षता के अनुसार उन्हें कुशल किया जा सके तथा आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान की यथा स्थिति तथा उसका साहित्यिक रूचि के साथ संबंध को भी जाना जा सकें। साथ ही व्याकरिणक घटक मुहावरे ज्ञान के विभिन्न स्त्रोतों के संबंध में भी जानकारी एकत्रित कर उस ज्ञान में शिक्षक के योगदान को भी आंका जा सके।